वृद्ध और उसका दरवाज़ा

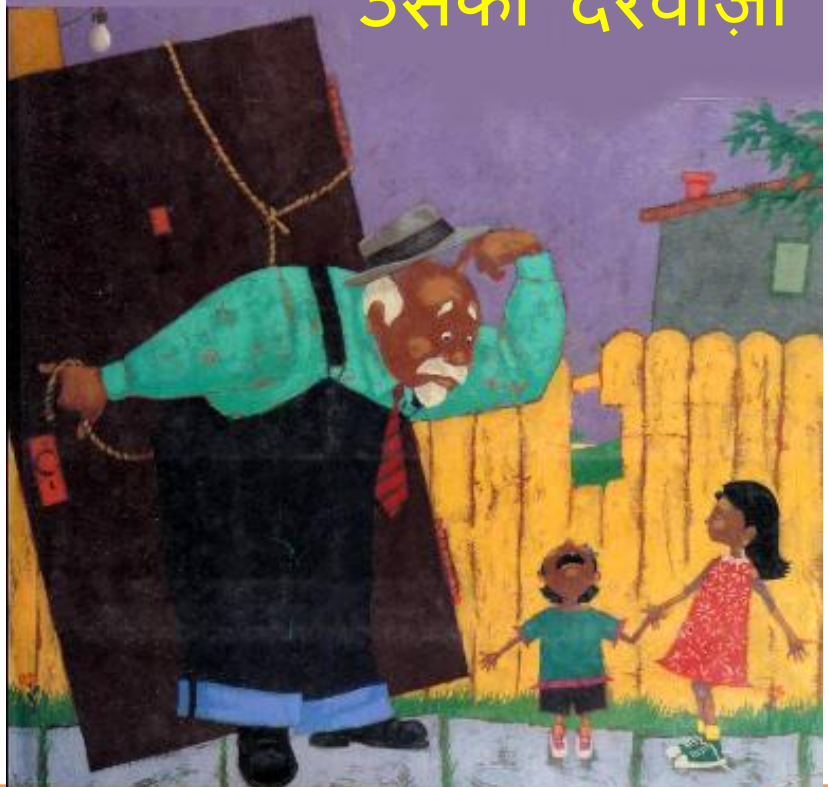

वृद्ध और उसका दरवाज़ा

मैक्सिको में एक छोटा सा गीत लोकप्रिय है, 'दरवाज़ा हो या सूअर. वृद्ध के लिए नहीं है कोई अंतर.' ऐसा इसलिए है कि एक वृद्ध को (स्पैनिश भाषा में) दोनों शब्द सुनने में एक जैसे ही लगते हैं, खासकर जब वह ध्यान से सुन न रहा हो. जो युवा या वृद्ध किसी की बात ध्यान से नहीं सुनते वह मुसीबत में फंस सकते हैं.

यह कहानी उस वृद्ध की है जो एक गाँव में रहता था. वह बगीचे में काम करने में तो बहुत निपुण था परन्तु अपनी पत्नी की बात सुनने में बहुत लापरवाह था.

बगीचे में वह सबसे बड़े टमाटर और सबसे तीखी मिर्च उगा सकता था. उसकी मुर्गियाँ खूब बड़ी और सफेद होती थीं और उसके सूअर पानी के गुब्बारों जैसे फूले हुए होते थे.

लेकिन जब भी उसकी पत्नी उसे पुकारती वह झटपट बगीचे में आकर कुदाल उठा लेता था और व्यस्त होने का ढोंग करता था. बाद में खाने के समय वह पत्नी से कहता, "सच में, मैंने सुना ही नहीं था."

एक शनिवार के दिन बरामदे में बैठा अपने कुत्ते, कोको, को वह नहला रहा था कि, अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने, उसकी पत्नी घर से बाहर आई. वह एक मित्र के घर खाने पर जा रही थी.

"मैं नहीं चाहती कि तुम देर से आओ," पत्नी ने उसे सचेत किया.

"मैं देर नहीं करूँगा," उसने कहा. "बस मैं इसे नहला लूँ."

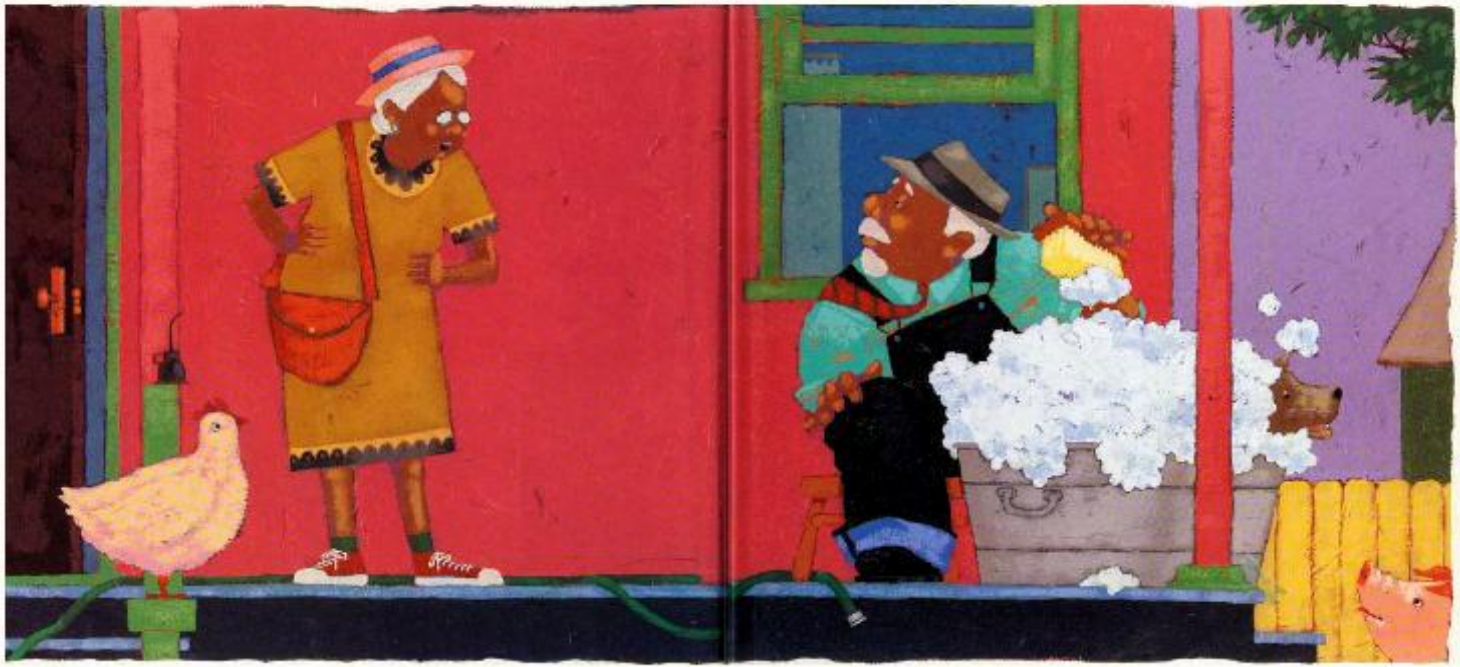

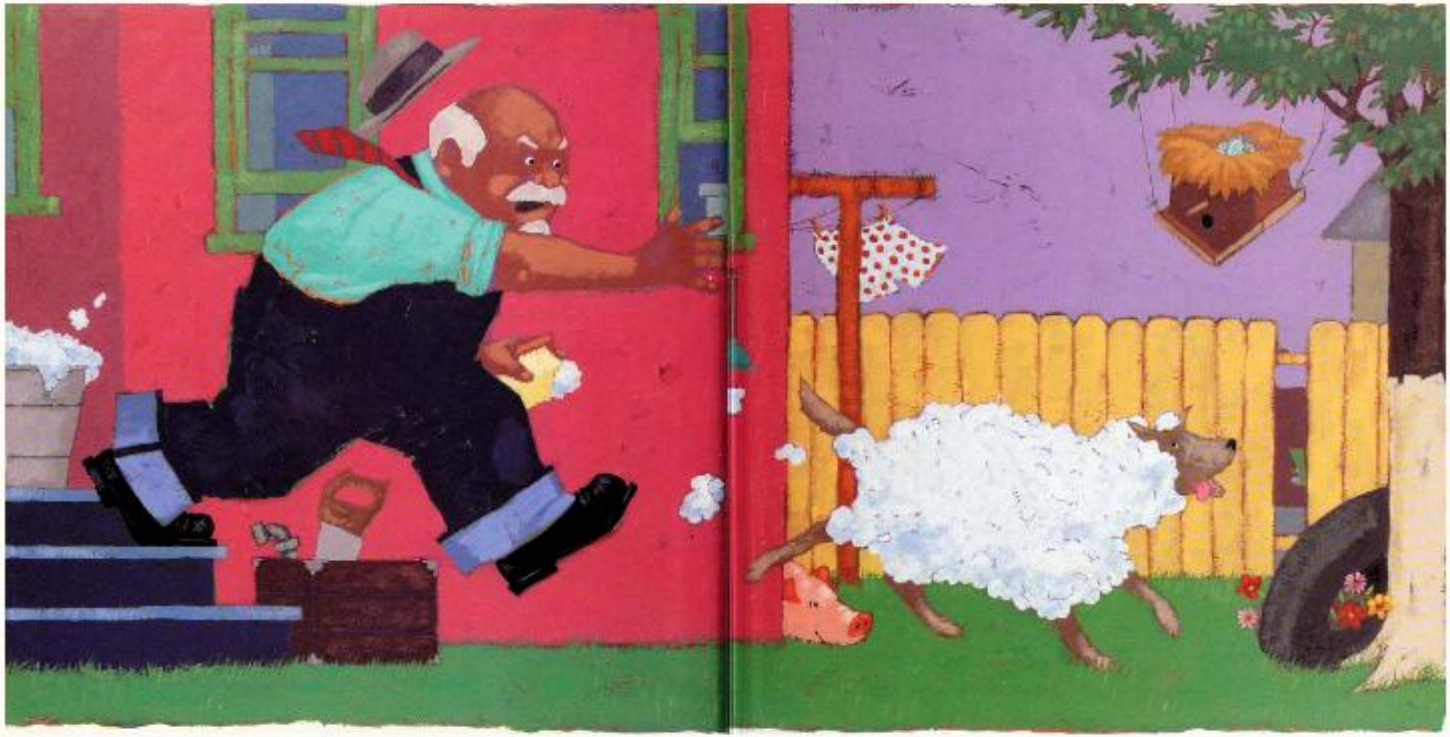

लेकिन उसी पल, साबुन की झाग में लिपटा, कोको टब से कूद कर बाहर भाग गया. साबुन और ब्रश को वहीं छोड़, वृद्ध कुत्ते के पीछे दौड़ा. उन्होंने घर के तीन और एवोकैडो पेड़ के नौ चक्कर लगाये. उसकी मुर्गियाँ और सूअर उनके पीछे-पीछे दौड़ते रहे.

“अपने साथ एक सूअर लेते आना,” हर बार चक्कर लगा कर जब वह घर के सामने आता तो पत्नी चिल्लाकर कहती. “क्या तुमने मेरी बात सुनी? सूअर लाना, भूलना नहीं!”

“हाँ, मैंने सुन लिया!” दौड़ते-दौड़ते वह हांफने लगा था, इसलिए ध्यान से सुन नहीं रहा था. आखिरकार, कोको टमाटर को पौधों में घुस गया. वहाँ वृद्ध ने उसे पकड़ लिया और उठा कर घर ले आया.

उनको इस तरह भागते देख कर पत्नी को चक्कर आ गया. उसने घर का फाटक बंद कर दिया और अपने मित्र के घर चल दी.

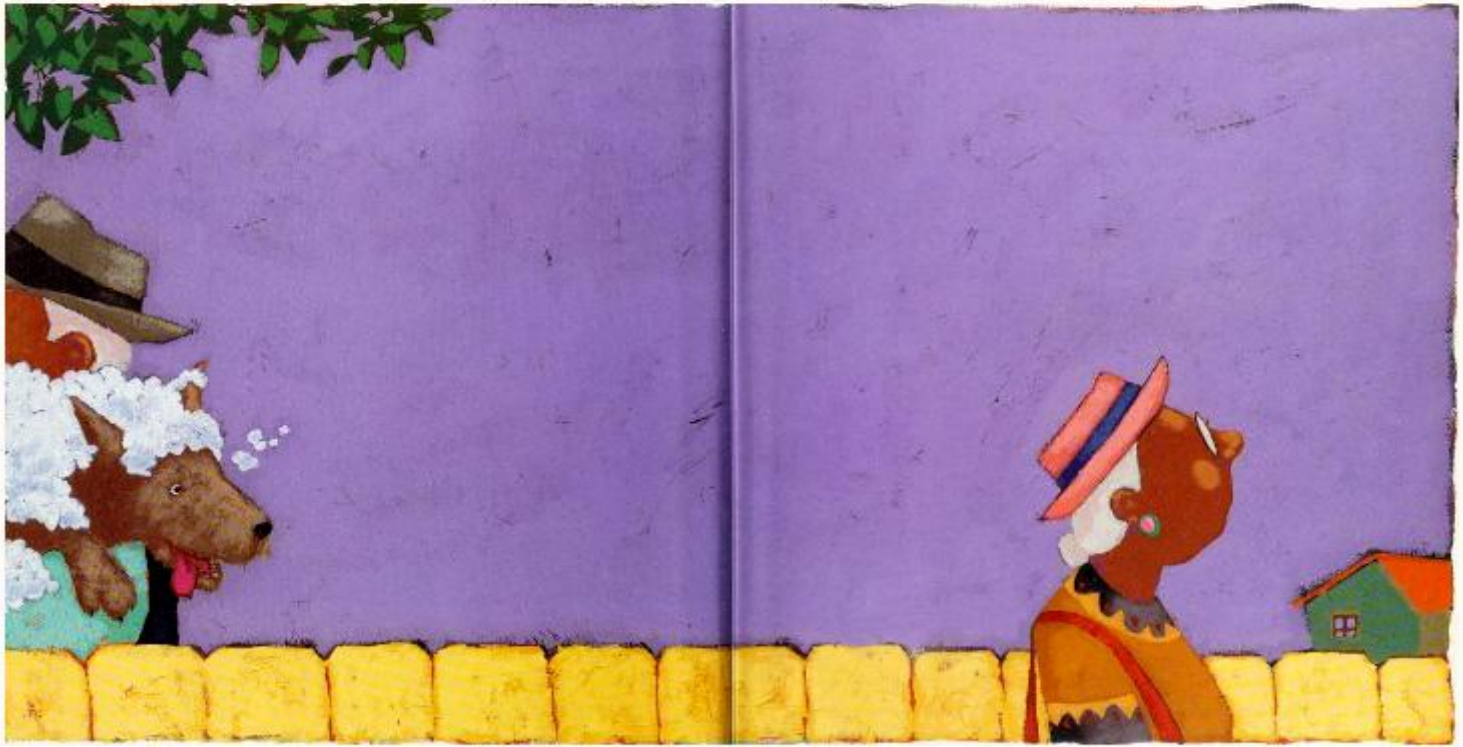

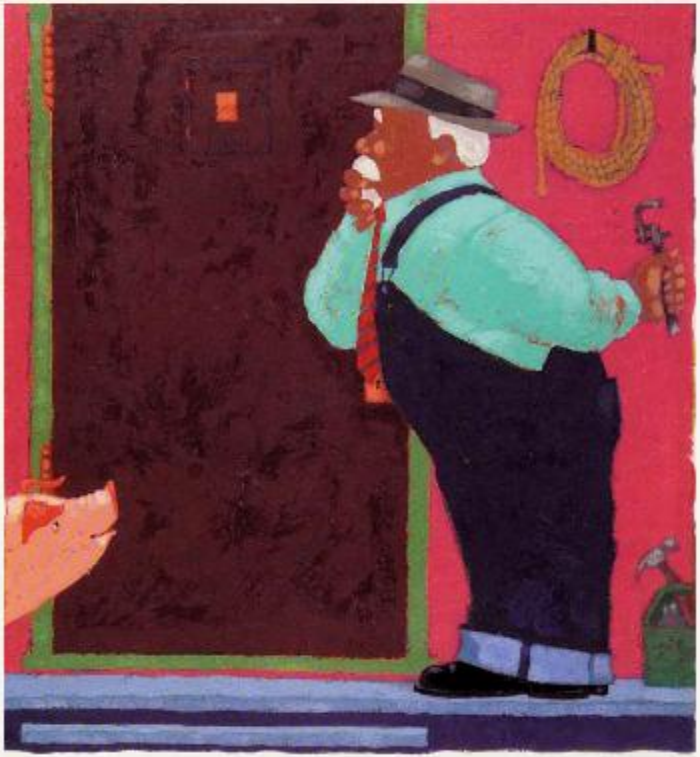

वृद्ध कोको को फिर से नहलाने लगा. कुत्ते को नहलाने के बाद वह अपना सिर खुजलाने लगा, “अरे, मुझे एक बात समझ नहीं आई कि मेरी पत्नी ने दरवाज़ा ले आने को क्यों कहा.”

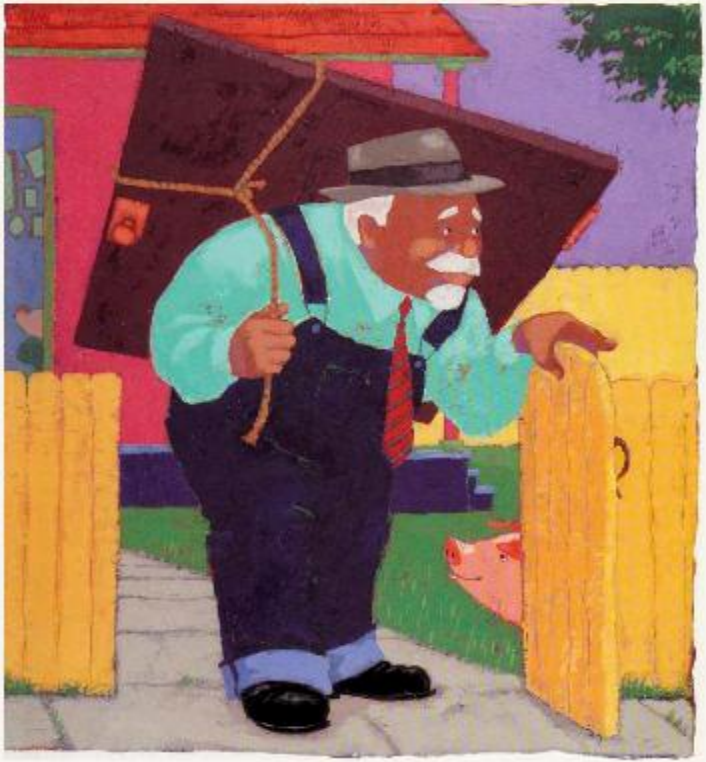

लेकिन उससे बहस करने का वह साहस नहीं कर सकता था. उसने कंधे उचकाये और प्रवेश-द्वार खोल लिया. फिर दरवाज़े को पीठ पर उठा कर वह चल पड़ा.

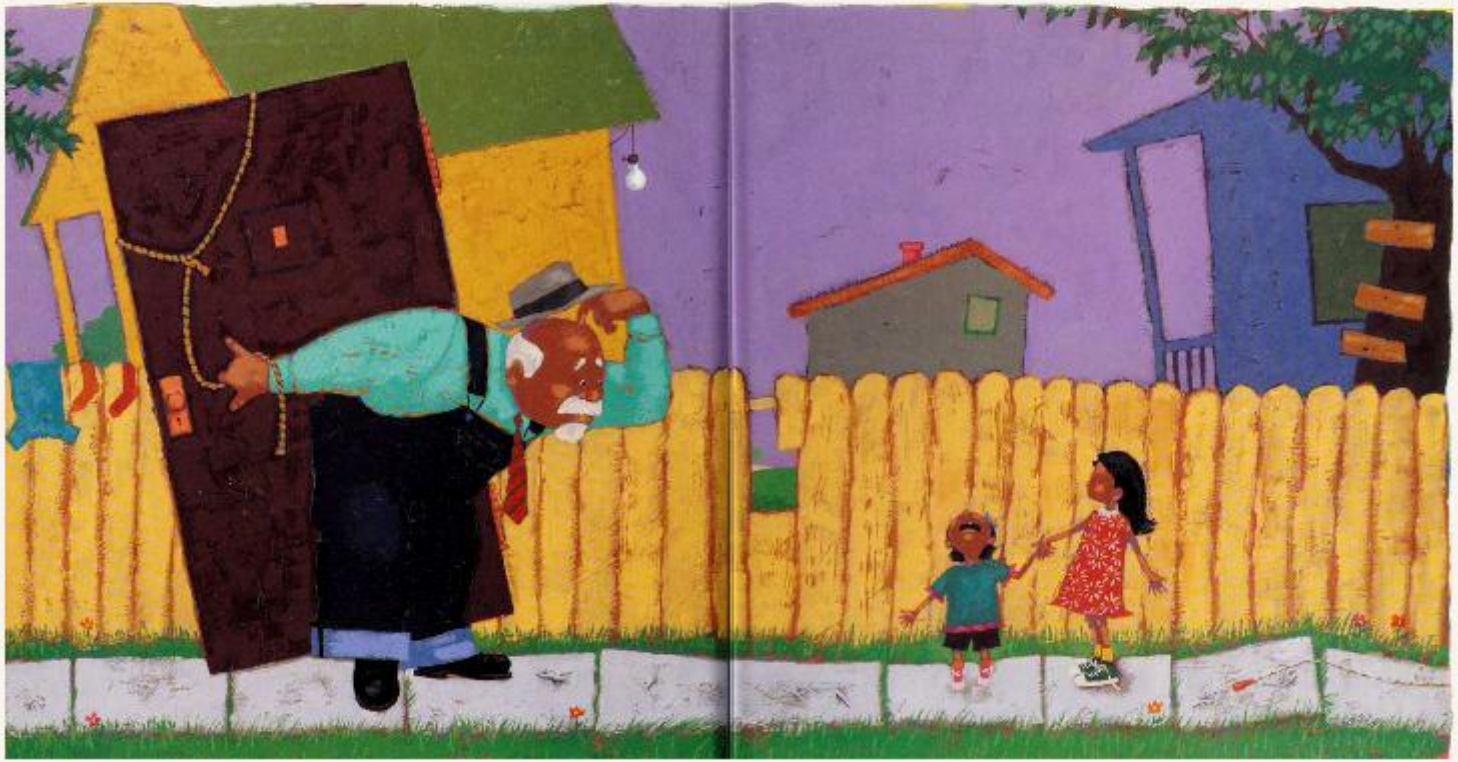

एक मील चलने के बाद एक छोटे, जर्जर घर के पास वह आराम करने के लिए रुका. घर के बाहर एक नन्ही लड़की अपनी रोती हुई छोटी बहन की देखभाल कर रही थी.

"क्या हो रहा है?" वृद्ध ने पूछा. "इसे क्या हुआ?"

"बच्ची उदास है," लड़की ने कहा. "अपनी उँगलियों और जेब के सुराख के अतिरिक्त इसके पास खेलने के लिए कुछ भी नहीं है."

"बेचारी," बच्ची के बालों को प्यार से सहलाते हुए वृद्ध ने कहा.

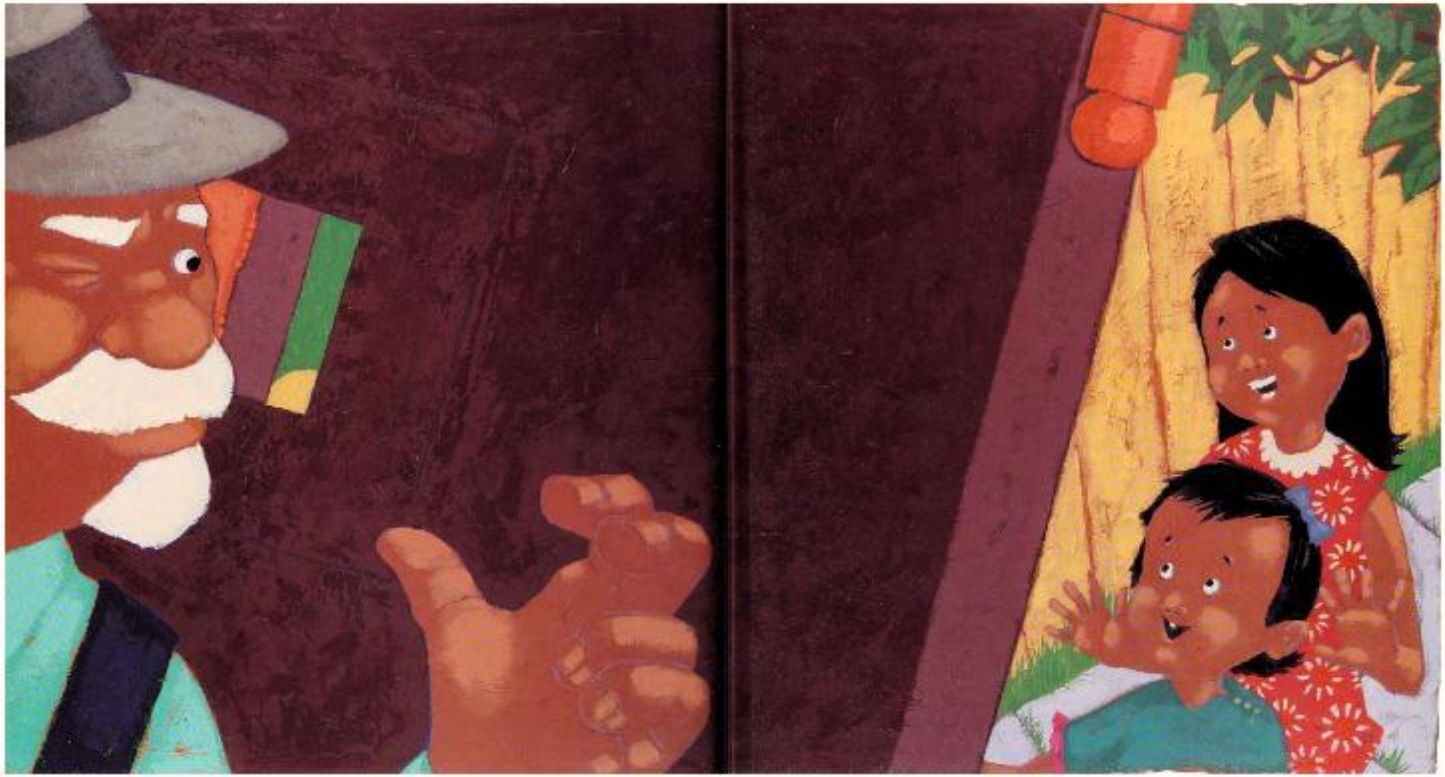

अचानक वृद्ध को एक बात सूझी. उसने बच्ची को गोद में उठा लिया और उसे दरवाज़े के पास लाया. उसने बच्ची को एक तरफ रखा, और

स्वयं दूसरी तरफ आ गया. वह लुका-छिपी खेलते रहे जब तक कि बच्ची ने हँस कर उसे प्यार नहीं किया.

वृद्ध अपने रास्ते चल पड़ा, वह प्रसन्नता से सीटी बजा रहा था और पत्थरों को ठोकर मार रहा था. सड़क खाली थी नीला आकाश एक चौड़ी हैट समान ऊपर फैला हुआ था.

फिर जैसे ही वह एक पेड़ के निकट से निकला तो पेड़ से लटके मधुमक्खियों के छत्ते से दरवाज़ा जा टकराया.

उसके चारों ओर मधुमक्खियाँ गुस्से से भिनभिनाने लगीं.

"हे, हे, हे" वह चिल्लाया और दौड़ता रहा जब तक कि उसकी टाँगे थक नहीं गईं. "यह मधुमक्खियाँ तो बहुत तेज़ हैं!" हाँफते हुए वह ज़मीन पर लेट गया और दरवाज़ा अपने ऊपर रख लिया, गुस्सैल मधुमक्खियाँ दरवाज़े के ऊपर से निकल गईं. फिर उसने धीरे से दरवाज़े के पीपहोल से देखा और उसे नीले आकाश का चौकोर टुकड़ा दिखाई दिया.

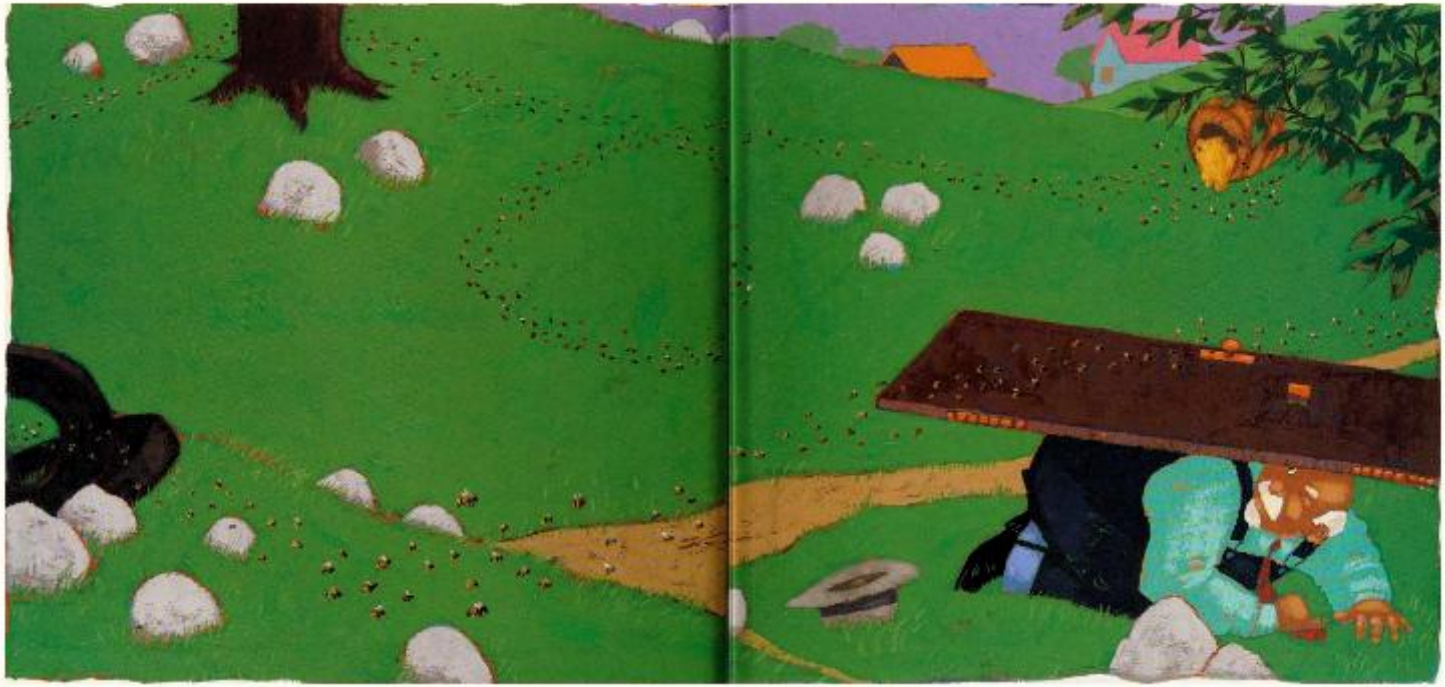

"आज तो बाल-बाल बचा!" उसने कहा और खड़ा हो गया. उसने मधुमक्खियों के छत्ते को देखा और शहद के बारे में सोचा. इस शहद को बर्बाद करने से क्या लाभ होगा, उस के मन में आया. उसने शहद अपनी हैट में डाल लिया और हैट को दरवाज़े पर रख कर अपने रास्ते पर चल दिया.

तभी एक थका हुआ हंस आकाश से नीचे आकर दरवाज़े पर आ बैठा. दरवाज़े का भार बढ़ गया.

"प्लीज़, मेरे दरवाज़े पर आराम कर लो," वृद्ध ने कहा. "जितनी देर चाहो इस पर सवारी कर लो."

थका हुआ हंस कृतज्ञता से काँ काँ करने लगा. वह एक मील तक दरवाज़े पर बैठा रहा. जब वृद्ध आराम करने के लिए रूका तो हंस ने अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ कर दूर चला गया. वृद्ध ने माथे से पसीना पोंछा और दरवाज़े को देखा.

"यह क्या है?" उसने कहा, उसकी आँखें चमक रही थीं. उसके हाथ में एक बड़ा अंडा था.

"अरे वाह," उसने प्रसन्नता से कहा. "मैं कितना भाग्यशाली हूँ."

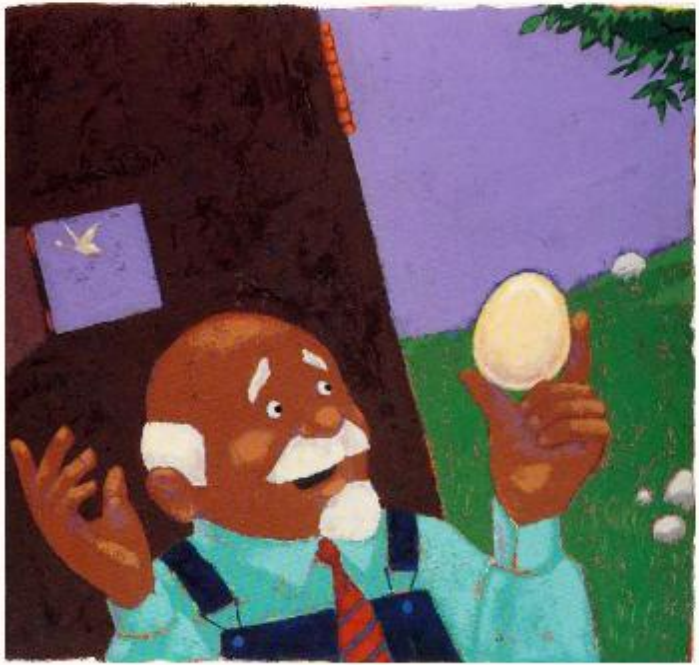

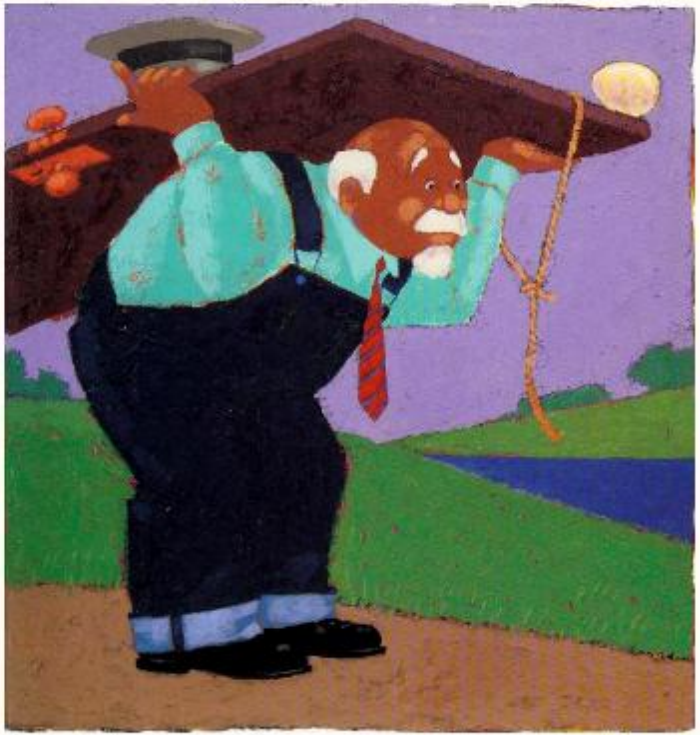

दरवाज़े को कंधों पर उठाये हुए वह फिर से चल पड़ा. लेकिन शीघ्र ही उसने झील से आती हुई चीख-पुकार सुनी. हाथ से आँखों पर छाया कर, उसने झील की ओर देखा.

"सहायता करो!" एक लड़का चिल्ला रहा था. "मेरी सहायता करो!"

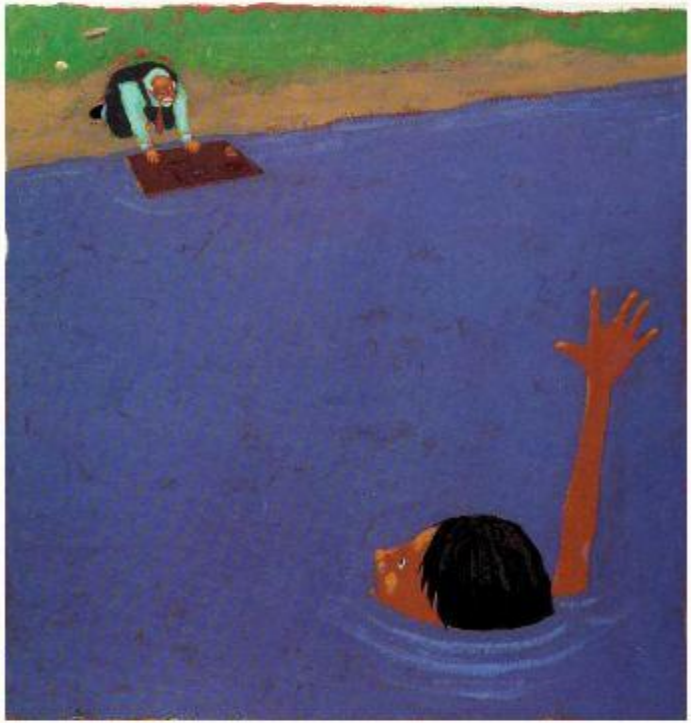

वृद्ध झील की तरफ भागा. उसने दरवाज़ा पानी में फेंक दिया. उस पर बैठ कर, हाथ से पानी पीछे धकेलते हुए वह डूबते हुए लड़के की ओर जाने लगा. उसने लड़के को खींच कर दरवाज़े पर चढ़ा लिया. दोनों ने राहत की साँस ली. एक कछुआ वृद्ध की कमीज़ से और एक मछली उसकी जेब से बाहर आई.

लड़के ने उसका धन्यवाद किया. “बारंबार धन्यवाद,” उसने कहा. “बस वचन दो कि तुम अपने माता-पिता का कहा मानोगो,” वृद्ध ने लड़के को किनारे की ओर ले जाते हुए कहा, “और जब तक तैरना नहीं सीख जाते, तुम पानी में नहीं जाओगे.”

किनारे पर आकर वृद्ध ने लड़के के चेहरे पर चिपके एक गीले पत्ते को हटाया. फिर लड़के की कमीज़ से एक मछली निकाली. “देखो, एक और मछली,” उसने प्रसन्नता से कहा और मछली को जेब में रख लिया.

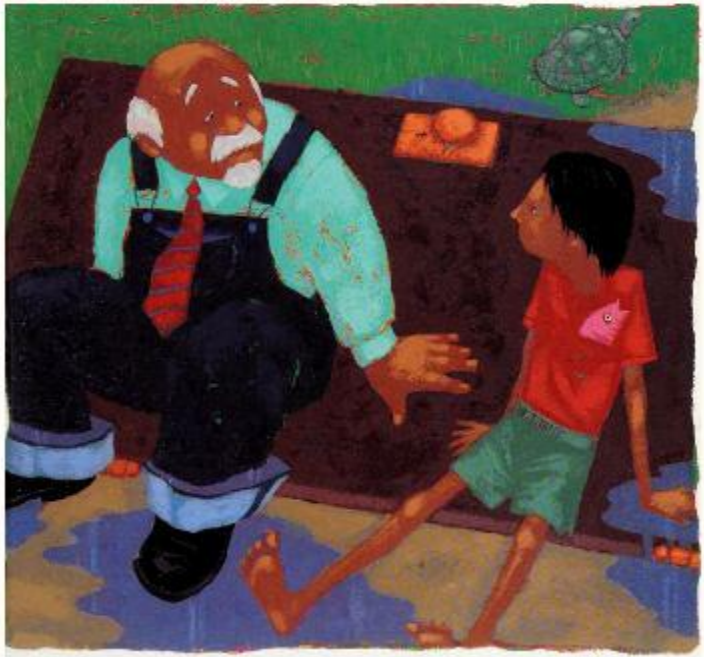

वृद्ध ने लड़के को अलविदा कहा और गीले दरवाज़े को कंधों पर फिर उठा लिया. वह झटपट सड़क की तरफ चला क्योंकि वह जानता था कि उसे देर हो गई थी. उसकी पत्नी नाराज़ हो रही होगी.

लेकिन वह कुछ मिनटों के बाद फिर रूक गया, जब उसने एक युवक को वैग्न में अपना सामान रखते देखा.

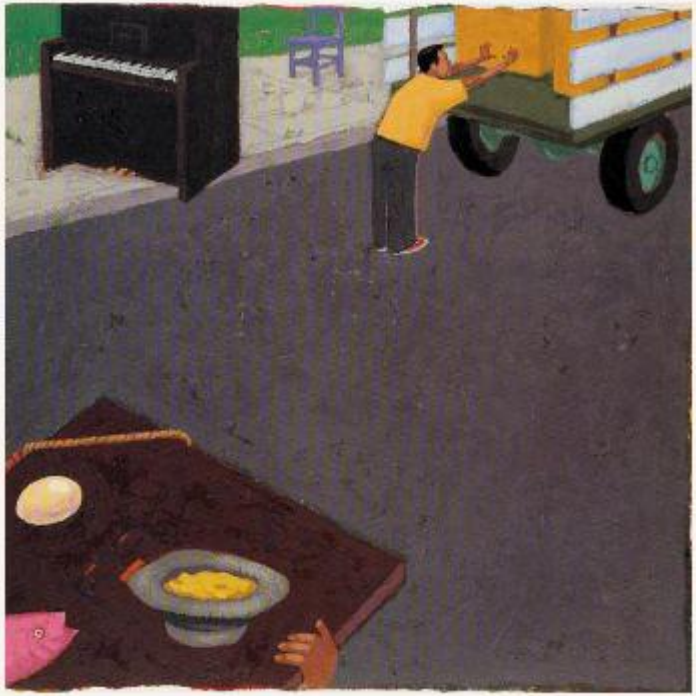

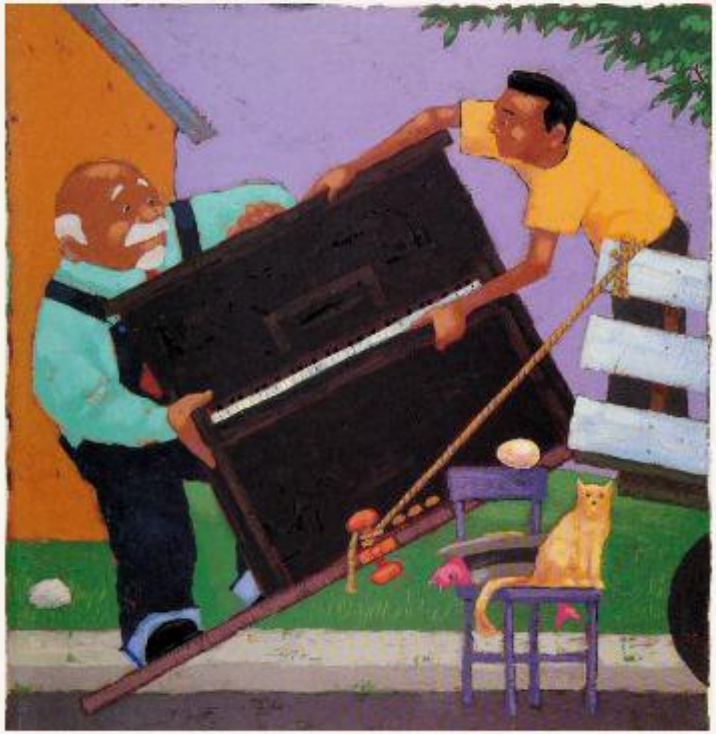

"चलो, इसका उपयोग करते हैं," वृद्ध ने दरवाज़े को थपथपाते हुए कहा. उसने दरवाज़े को वैग्न के साथ ऐसे टिका दिया कि एक रैंप बन गया. रैंप पर धकेल कर उन्होंने कुर्सियाँ और मेज़ और बड़ा पियानो वैगन पर चढ़ा दिये. पियानो को धकेलने पर झंकार भी हुई.

"बहुत-बहुत धन्यवाद," युवक ने कहा.

"अरे, यह तो कुछ भी नहीं है," वृद्ध ने कहा. "मुझे नहीं पता था कि एक दरवाज़े का इतने तरीकों से उपयोग किया जा सकता है.

दोनों ने मिल कर दरवाज़ा वृद्ध के कंधों पर रख दिया. युवक ने दो तरबूज़ दरवाज़े पर रख दिये. "यह मेरे बगीचे के हैं," उसने कहा.

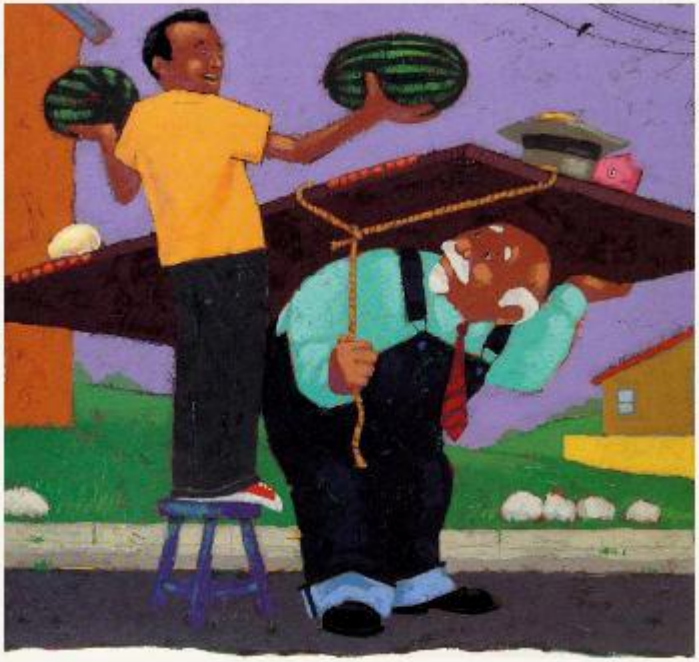

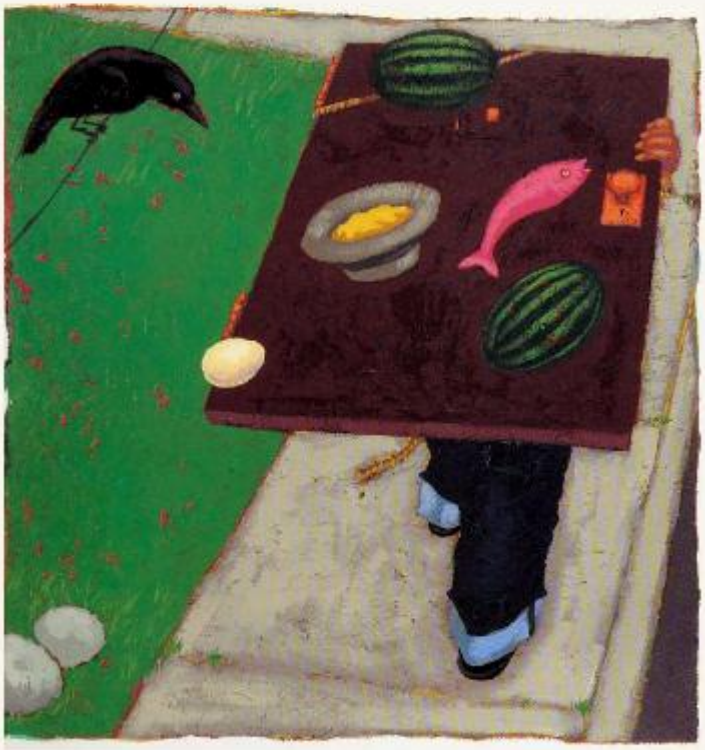

अपने उपहार लिए वृद्ध झटपट चलने लगा और आखिरकार मित्र के घर पहुँच गया. माँस भूनने के लिए बार्बिक्यू अहाते में लगा था. संगीत बज रहा था. उपहारों से भरी मटकी एक पेड़ से लटक रही थी.

"मैं आ गया," उसने कहा. दरवाज़ा उसके कंधों से फिसल गया.

"हे भगवान," उसकी पत्नी चिल्लाई. "तुम दरवाज़े के साथ क्या कर रहे हो?"

"अरे, तुम ही ने तो इसे लाने के लिए मुझे कहा था," उसने माथा पोंछते हुए कहा. "यह बड़ी मेहनत का काम था."

"मैंने सूअर लाने को कहा था, दरवाज़ा नहीं!" वह अपने मित्र की ओर घूमी. "वह मेरी बात कभी नहीं सुनता. मैंने इसे सूअर लाने को कहा था और वह दरवाज़ा ले आया!"

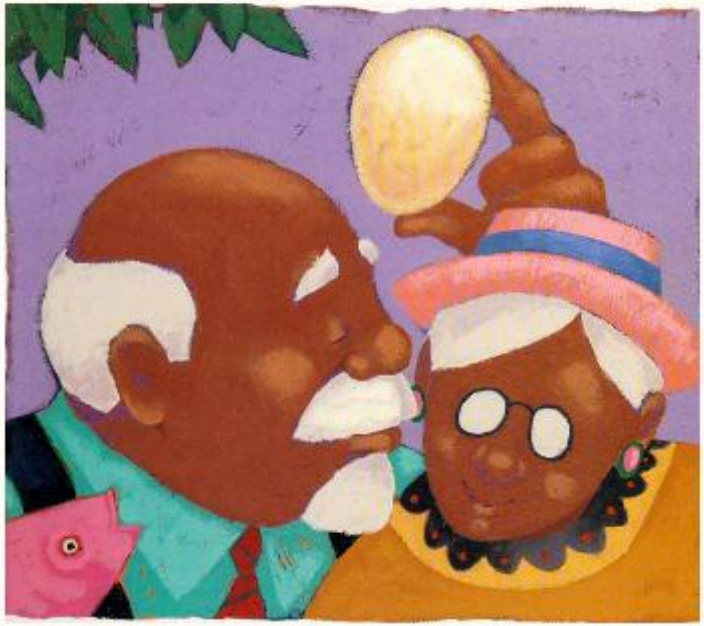

वृद्ध अपने आप पर हँसने लगा. उसने जेब से अंडा निकाला और कहा, "लेकिन देखो मैं और क्या कुछ लाया हूँ."

"अंडा?" पत्नी ने आश्चर्य से कहा.

"हाँ, एक अंडा और थोड़ा शहद, एक मछली और यह तरबूज़! और यह भी," उसने कहा और नन्ही बच्ची का चुंबन उसे दिया.

"तुम यह सब ले कर आए?" पत्नी ने शर्माते हुए कहा.

"हाँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह सब कैसे हुआ...."

"अपनी कहानी खाना खाते हुए बताना," पड़ोसी ने टोकते हुए विनम्रता से कहा.

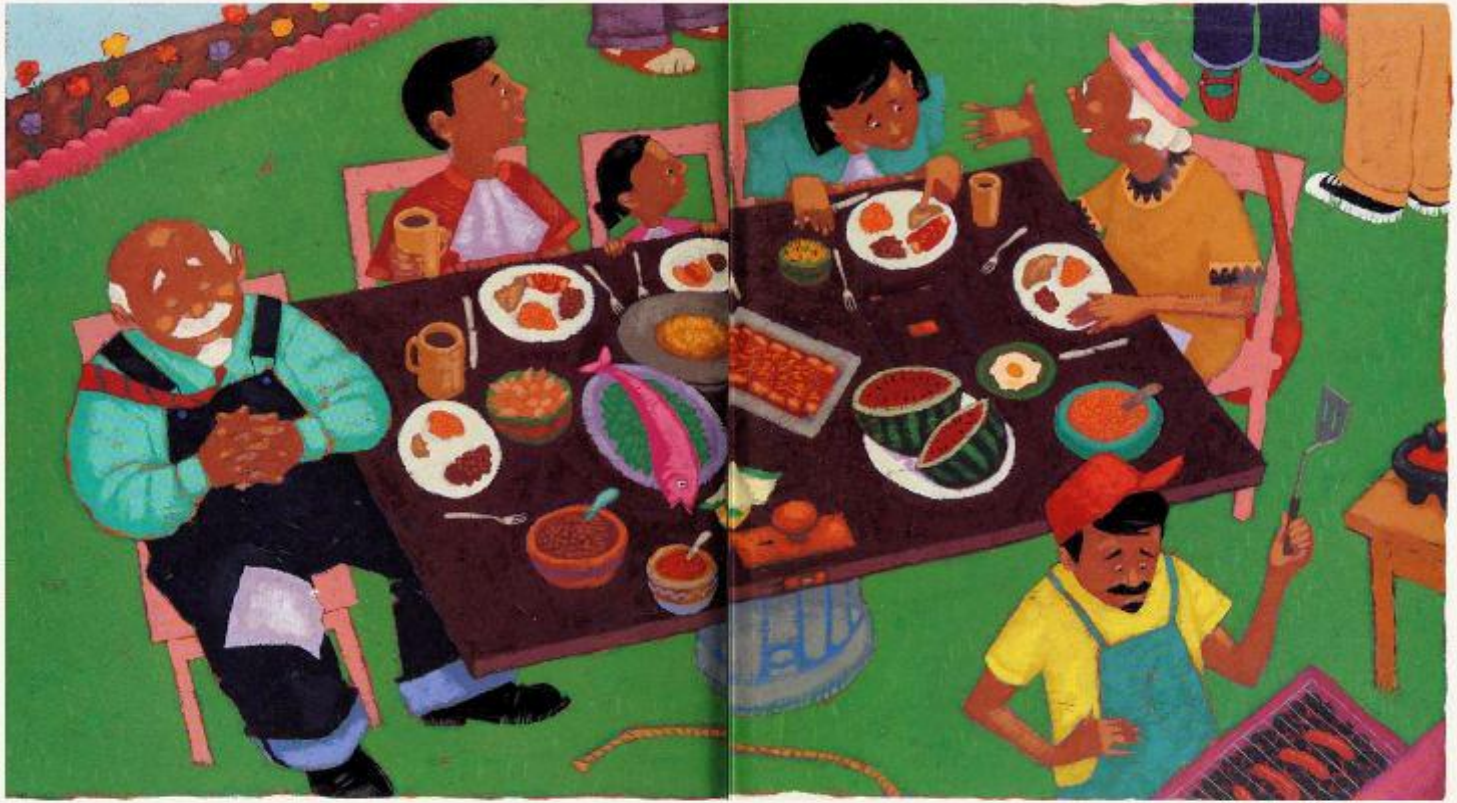

उन्होंने मछली को भून लिया, अंडे को उबाल लिया, तरबूज़ के टुकड़े कर लिए.

फिर सारा सामान मेज़ पर सजाया और शहद से भरी हैट को बीच में रख दिया.

दरवाज़ा हो या सूअर. वृद्ध के लिए नहीं है कोई अंतर.